

धर्मश्च साम्राज्यम् प्राप्तवान् असि; 3.12286.: दिष्या वर्धीमहे पार्थी दिष्या 'सि पुनर् आगतः. 2) augere, amplificare. MAH. 1.5540.: पराम्भाणि निर्वित्य स्वराज्यं वृत्तुः पुरा; RIGV.52.7. — वृद्ध 1) adultus. H. 4. 50. 2) auctus, dives. N. 12.68. 3) senex. BR. 1.22. — Caus. augere. SU. 2.10.: तेजो बलस्त्र देवानां वर्धयन्ति. (Cf. कृष्ण, वृह्ण, वृह्ण, रुह्ण, anglo-sax. *vridian* crescere, goth. *vaur-ts* radix (v. कृष्ण); fortasse *valda* impero a crescendo, potestate dictum sicut *mah-ts* potestas, *mag* possum, *praet. mah-ta*, pertinent ad मह्यु crescer; slav. *vladū* impero (vid. Miklosich), *vlas* capillus (vid. रोमन्), russ. *volos* id., hib. *folt* id., *fridh* «a forest, a park» fortasse *for-bair* «grow thou, increase», *for-bairt* «increase, profit, emolument» = वृद्धि praef. प्र; slav. *rastū* cresco e *vradtū*, nisi pertinet ad कृष्ण i. e. कृष्ण; russ. *vroschdaju* ingenero, ingigno = Caus. वर्धयामि; gr. Βλαστός, Βλαστη, Βλαστάνω ε Βλαστός vel Βλαδ-τός etc.; etiam *ρίζα* propter aeol. *ριζα* nunc potius huc quam ad कृष्ण traxerim (v. Benfey I. 78. 79.). Huc etiam trahi posset lat. *grandis*, inserta nasalis, sicut in वृह्ण, mutato *v* in *g*; anglo-sax. *great* magnus, germ. vet. *grōz* id.).

c. अभि i. q. simpl. N. 8.14.: अस्य वै यूते भूयो रगो अभिवर्धते.

c. प्र id. H. 1.20. DR. 5.7.

c. त्रि id. N. 1.17. SA. 1.19.6.23.

c. त्रि praef. सम् id. MAH. 1.4977.

c. सम् id. SA. 2.10. — Caus. 1) augere. MAH. 1.8279. 2) alere, nutrire, educare, *aufziehen*. HIT. 26.16.: सच मत्स्याहारविशेषैरु मां संवर्धयिष्यति; 58.10.: मांसाहारदानेन तं विडालं संवर्धयति. Educare, educere. R. SCHL.I.39.18.: घृतपूर्णेषु कुम्भेषु धात्र्यस् तान् समवर्धयन्; MAH. 1.4264.: तस्माद् गर्भं समाधत्स्वं भीष्मः संवर्धयिष्यति; 5087.: संवर्धयामास (मिथुनम्); 5089.: मया बालावृद्धौ संवर्धितौ.

वृन्त n. petiolus, pediculus. AM.

वृन्द m.n. grex, caterva. RITU-S.1.23. Lass.45.10. MEGH.64.

वृश्च 4. p. (वृत्याम्) eligere. Cf. वृ.

1. वृष्टि 1. p. interdum 4. 1) pluere, pluviam demittere. R. SCHL.I. 9. 56.: वर्षण सहस्रा देवः; MAH. 1.6621.: न वर्षण सहस्राक्षो राष्ट्रेचै 'वा 'स्य; 5464.: वर्षमाणा धनाः. Cum acc. pluere aliquid. MAH. 1.1419.: सो 'प्य अवर्षत शोणितम्; 3.796.: मय्य अवर्षत उर्धविः शरधारा. Cum acc. et instr. irrigare, perfundere alqd aliquā re (beregnen). DR. 8.16.: नक्तलम्... क्षेमङ्गरमहामुखौ ... शरवर्षैरु अवर्षताम्; DEV. 3.2. — Caus. facere ut pluviam demittat. MAH. 3.9991.: तपसो यः प्रभावेण वर्षयामास वासवम्. (Fortasse वृष्टि mutilatum e वृक्षे et hoc ortum e वृक्षे adjectā sibilante; cf. gr. Βρέχω, ἐργη, v. वर्ष; fortasse οὐρανός a pluendo dictum, v. Benfey I. 324.; lat. *rigo*, goth. *rig-n* pluviu, *rig-neith* pluie; germ. vet. *regan* pluvia, *reganōn* pluere, v. Graff. 2.441. sq.; nisi pertinent ad सृज् effundere. Hib. *fras* «a shower, hail»; lith. *rokia* pluvia tenuissima; *wers-inē*, *wers-mē* fons. Vid. वृष्टि, वृषण.)

c. अभि 1) pluere, c. acc. vel instr. rei. R. SCHL.I.52.23.: तत् सर्वङ्गं कामधुग् दिव्ये अभिवर्ष कृते मम; MAH. 1.4062.: देवाः ... अभ्यवर्षन्त कुसुमैः. 2) c. acc. et instr. irrigare alqd aliquā re (beregnen). IN. 4.11.: सुच्छदश्वा 'न्नपानेन विविधेना 'भिवर्षति. pass. A. 7.27.: अभिवृष्टानि शृङ्गाणि ... धराभृताम्.

c. प्र pluere, pluviam demittere. MAH. 1.6630.

c. प्र praef. अभि id. MAN. 1.304.

2. वृष्टि 10. 4. (शत्रिक्वन्धने x. प्रजनैश्ये r.) potentem esse, ligare (ut mihi videtur, Denom. a sq.), generare, impetrare.

वृष्टि m. (r. वृष्टि irrigare semine s. मृ) taurus. (Primitive mas in universum, v. वृषण. Ad rad. वृष् i. e. वर्ष् nunc etiam traxerim gr. ἄρσην, ἀρρέν, quod supra (p. 57.) minus apte cum कृष्णम comparavimus, quod ipsum e वृष् षम् mutilatum esse videtur; lat. *verres*, nisi pertinet ad वृष्टि q.v., per assim. e *verses* explicaverim; fortasse *hirucus* e *vircus* pro *varcus*, vid. r. वृष्टि; lith. *werszis* vitu-